मेरा हिरोशिमा

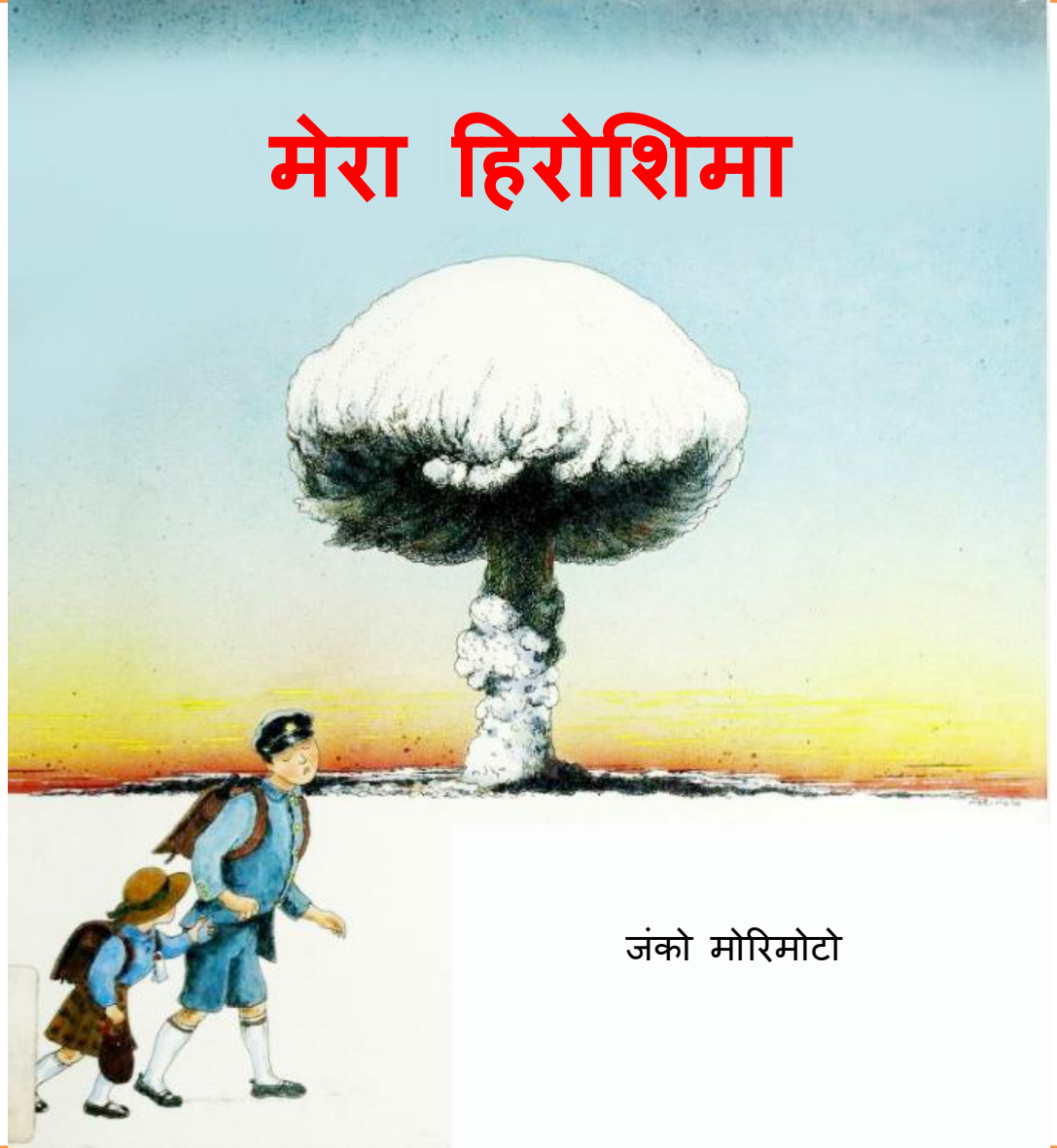

जंको मोरिमोटो

मेरा हिरोशिमा
WASHINGTON VILLAGE

हिरोशिमा मेरी यादों का शहर है. वो हरे भरे पहाड़ों
से घिरा हुआ है और समुद्र के किनारे बसा है.
हिरोशिमा में सात सुंदर नदियाँ बहती हैं.

मैं अपने परिवार में सबसे छोटा था. मेरे परिवार में पिता और माँ, मेरा भाई और दो बड़ी बहनें थीं.

मुझे कभी-कभी अकेला रहना पसंद था. तब मैं घर पर ही रहता था और उन बहुत सी चीज़ों के चित्र बनाता था जिन्होंने पूरे दिन मुझे आकर्षित किया था. वो काम मुझे सबसे ज्यादा पसंद था.

मेरे कई दोस्त थे लेकिन मेरे सबसे अच्छे दोस्त
फूमी और हारुको थे. हम बहुत सारे खेल खेलते थे
- हमारा पसंदीदा खेल था "संतरे और नींबू".

गर्मी का समय
आतिशबाजियों का समय
था. मुझे परिवार के साथ
आसमान में सुंदर रंग
और नमूने देखने में मज़ा
आता था क्योंकि वे ऊपर
आसमान में फटते थे.
जिस पुल हम खड़े थे
वहां से वे बहुत बड़े और
ऊँचे लगते थे.

मुझे स्कूल जाना पसंद नहीं था. हर सुबह मैं अपने भाई की जैकेट को कसकर पकड़ता था और उसके पीछे-पीछे चलता था.

मेरे शिक्षक एक भारी, काले फ्रेम वाला चश्मा पहनते थे. मुझे तब सबसे अच्छा लगा जब उन्होंने हमें पेंटिंग करना सिखाई.

जब मैं स्कूल के चौथे साल में था तब सर्दियों में, एक बड़ा युद्ध शुरू हुआ.

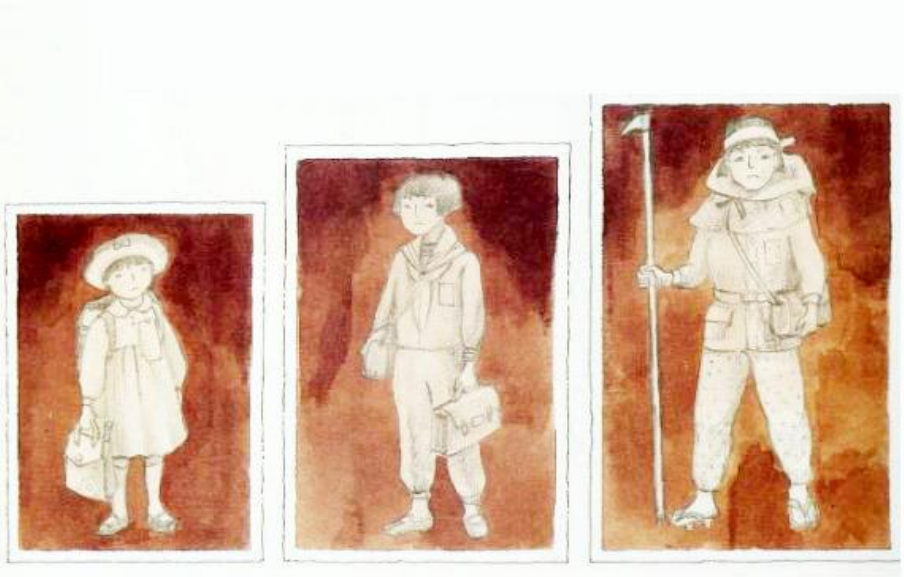

जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मेरे आस-पास की दुनिया बहुत बदलती गई. जब तक मैं हाई-स्कूल में पहुंचा, तब तक मुझे विशेष कपड़े पहनने पड़े, क्योंकि युद्ध ने हमारे देश में सब कुछ प्रभावित किया था.

दुकानों में सामान कम होता जा रहा था. सभी को अपनी गर्मी की छुट्टियां, सैन्य अभ्यास करते हुए बितानी पड़ती थीं.

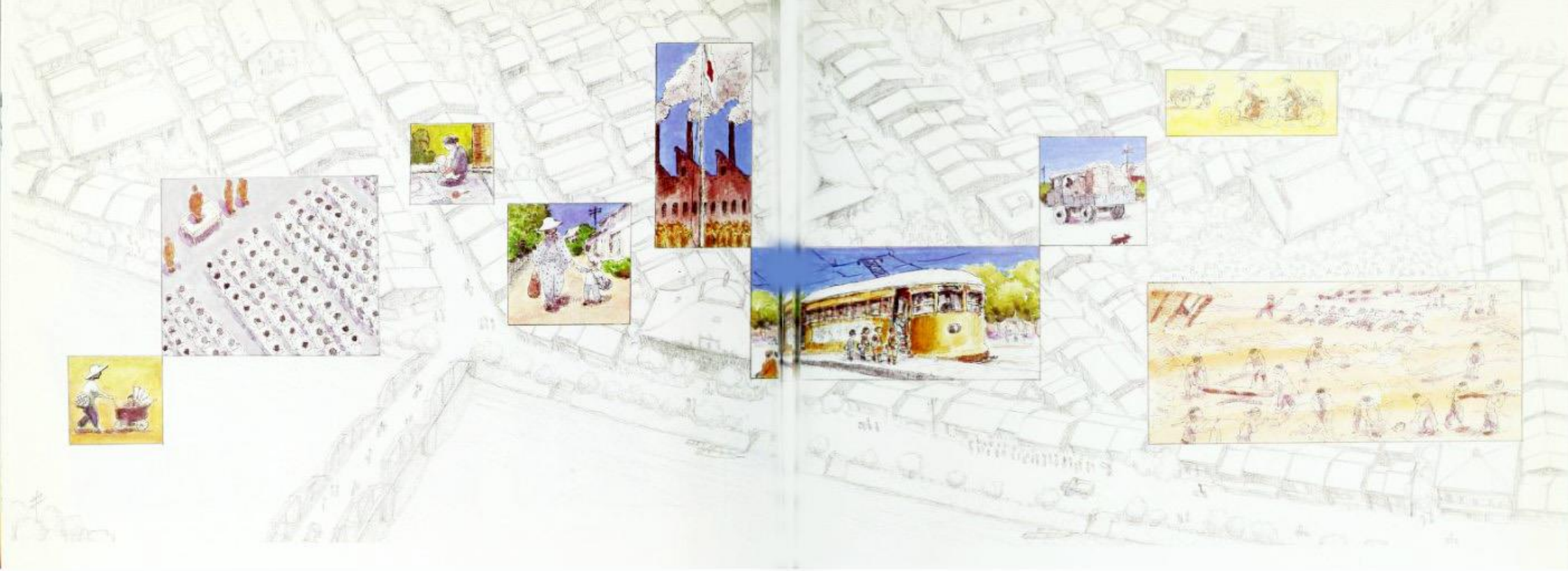

8.15 सुबह, अगस्त 6, 1945

हिरोशिमा के लोगों ने अभी-अभी अपने दिन का काम शुरू ही किया था. अचानक, सायरन बज उठा, और चेतावनी दी गई कि दुश्मन का एक विमान आ रहा था. लेकिन जल्द ही सायरन बंद हो गया और सभी अपने-अपने काम में लग गए.

उस दिन मेरे पेट में दर्द था और मैं स्कूल नहीं गया था. मैं अपनी बहन के साथ कमरे में बातें कर रहा था.

मुझे लगा कि मैंने एक विमान की आवाज़ सुनी,
लेकिन वो बहुत दूर और बहुत ऊपर लग रहा था.

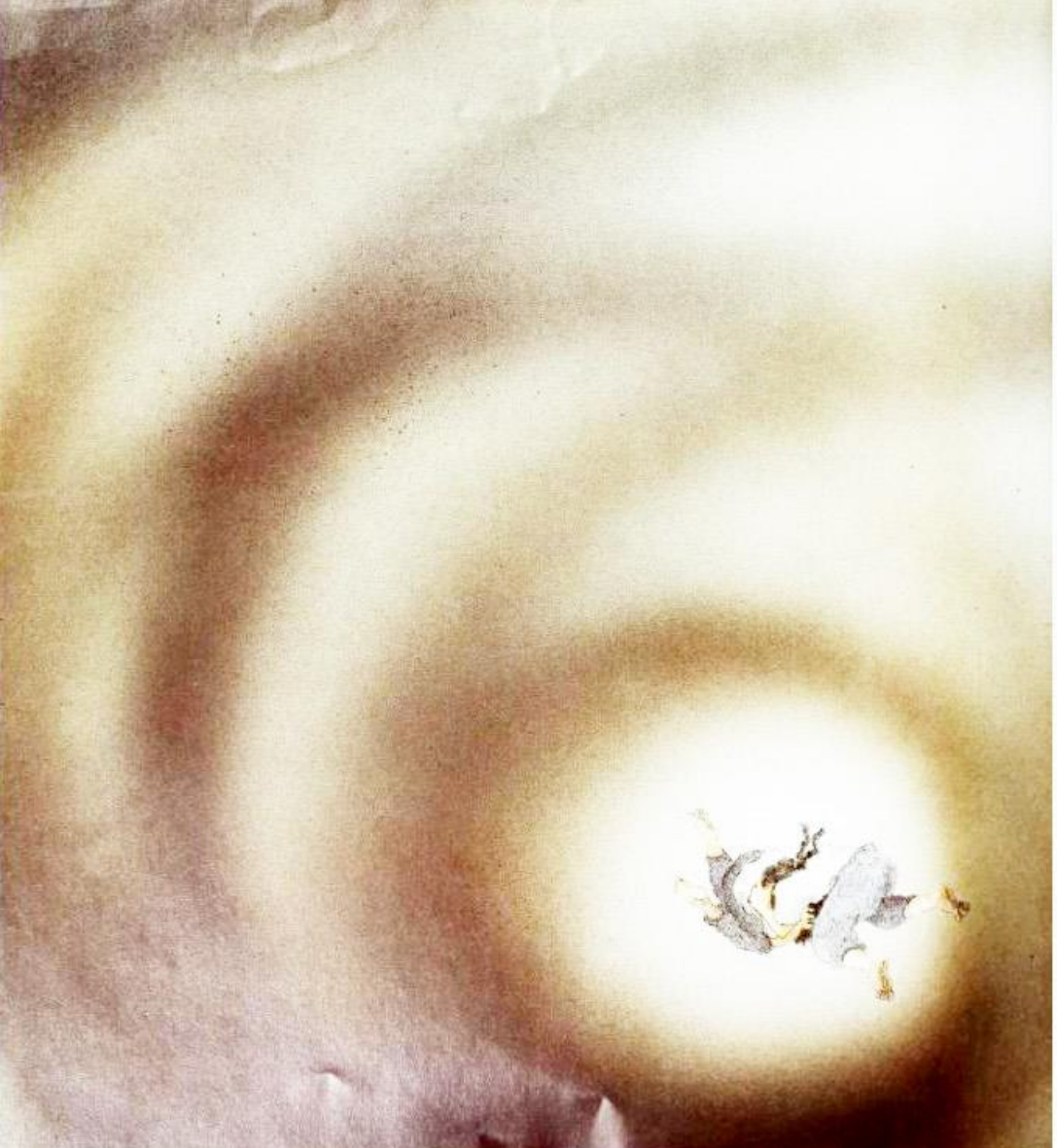

फिर मैं एक बहुत तेज़ आवाज़ और विस्फोट से नीचे गिर गया.

मेरी आँखें जलने लगीं और उनके सामने अँधेरा छा गया. मैंने अपनी बहन को पकड़ कर रखा.

सब कुछ फीका पड़ने लगा और ऐसा मुझे लगा जैसे कि मैं मर रहा हूं.

पर जब मैं जागा, तो मैं ज़िंदा था.
लेकिन हमारा घर पूरी तरह तबाह हो गया था.

जब मैं बाहर रेंगकर आया तो मैंने देखा कि पूरा
हिरोशिमा नष्ट हो गया था.
सब कुछ उड़ गया था, टूट गया था.
हर जगह आग जल रही थी.

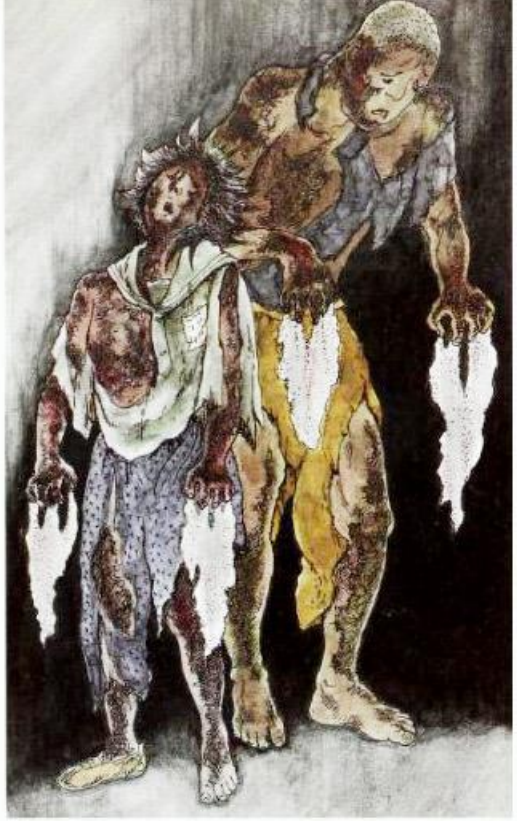

नदी के किनारे लोगों की भीड़ लगी थी,
हर कोई पानी के पास जाना चाहता था.

वहाँ पर एक बच्चा चिल्ला रहा था. वो अपनी
मृत माँ को जगाने की कोशिश कर रहा था.

मैं बहुत भाग्यशाली था, मेरा परिवार जीवित था और हमने एक साथ थे, एक गुफा में शरण ली थी.

पिता का चेहरा बुरी तरह झुलसकर सूज गया था. मेरे भाई की पीठ में खिड़की के कांच के टुकड़े घुस गए थे, क्योंकि वो खिड़की ने नीचे बैठा था. मेरी सबसे बड़ी बहन के दांत उसके होंठ से चिपक गए थे क्योंकि वो चॉपस्टिक का इस्तेमाल कर रही थी.

हमने देखा कि गर्मी की तेज धूप में सैकड़ों लोग जलने से बचने के लिए हिरोशिमा छोड़कर भाग रहे थे.

हर स्कूल घायलों के लिए अस्पताल बन गया था.
मैंने लोगों को चिल्लाते और दर्द से कराहते हुए सुना.
हर जगह जली हुई त्वचा की भयानक गंध आ रही थी.

एक के बाद एक कई लोगों की मौतें हुईं.
उनके शवों को स्कूल के मैदान में ले जाकर जला दिया गया.

उसके कुछ दिनों बाद हमने यह घोषणा सुनी कि युद्ध समाप्त हो गया था.

आधा साल बीत गया.

जो छात्र ज़िंदा बच गए थे, वे अपने स्कूलों में वापस गए, जली हुई मिट्टी में से मैंने एक एल्युमिनियम का लंच बॉक्स निकाला जिसमें मुझे जले, काले चावल मिले. मुझे अपने कुछ दोस्तों की हड्डियाँ भी मिलीं.

इस बात को कई साल बीत चुके हैं और मैं फिर से अपने स्कूल लौटकर आया हूं.

यह अभी भी एक चमत्कार है कि मैं बच निकला.

अब मुझे साफ सफेद जमीन और युवा छात्रों की शांतिपूर्ण छवियां दिखाई दे रही हैं, वो बिल्कुल वैसी ही हैं जैसे मैं बहुत पहले था.

हिरोशिमा के बारे में तथ्य

6 अगस्त 1945 को, सुबह 8.15 बजे जापानी शहर हिरोशिमा पर एक परमाणु बम गिराया गया था. यह पहली बार था जब युद्ध में इस तरह के बम का इस्तेमाल किया गया था.

- 70,000 लोग तुरंत मर गए
- 1945 के अंत तक 70,000 अन्य लोगों की मृत्यु हो गई
- 1950 के अंत में कुल 2,00,000 लोगों की मृत्यु हुई
- आज भी विकीरण से कुछ लोग मर रहे हैं जो शुरुआती विस्फोट में बाल-बाल बच गए थे.

ये आंकड़े संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में हिरोशिमा शहर द्वारा दिए गए थे.

इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि हाइपोसेंटर के 1.5 किलोमीटर के अंदर, बम का विस्फोट, 90 मीटर प्रति सेकंड की हवा के तूफान जितना था.

हर साल 6 अगस्त को, हिरोशिमा शहर में एक स्मरण समारोह आयोजित किया जाता है जिसमें दुनिया भर से हजारों लोग शामिल होते हैं.

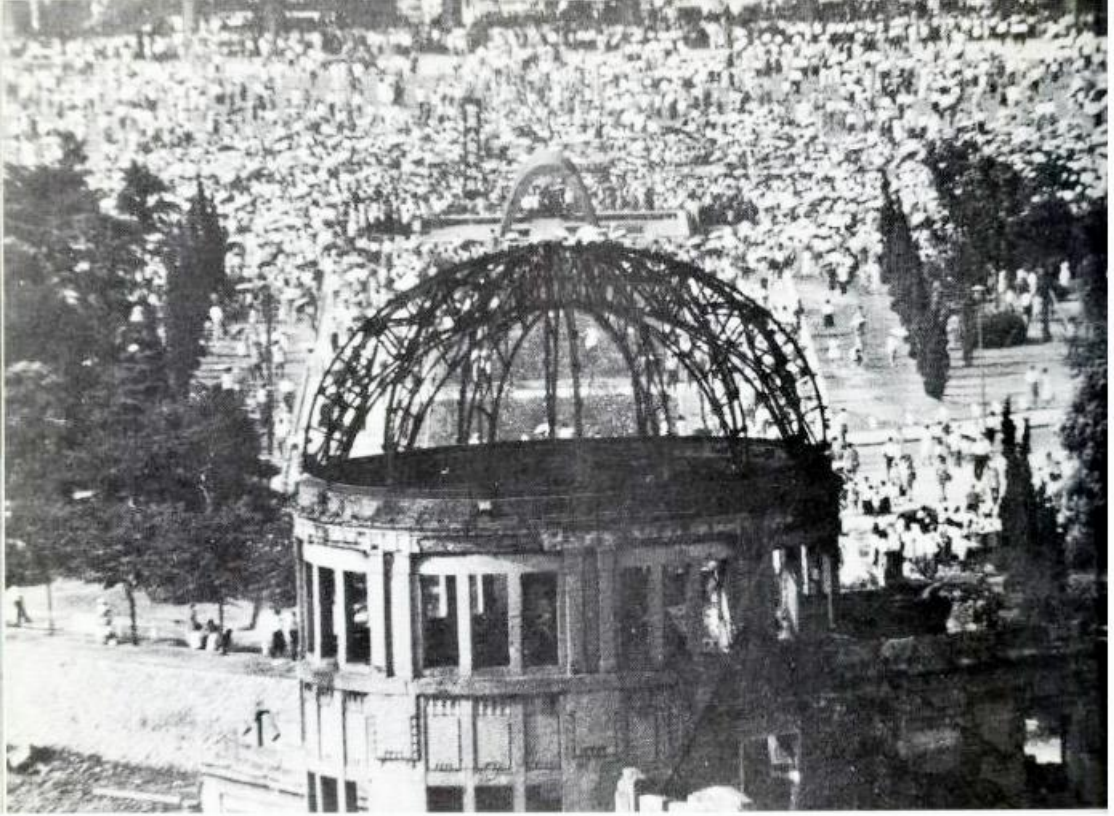

भगवान सभी आत्माओं को शांति से रहने दें

हम इस बुराई को कभी नहीं दोहराएं.

प्रिय माता-पिता और शिक्षकों,

इस पुस्तक में मैंने अपने बचपन की यादों के ज़रिये पहले परमाणु बम विस्फोट की कहानी बताने का विकल्प चुना है, ताकि आपके बच्चे भी कहानी को अपने जीवन से जोड़ सकें.

हिरोशिमा मेरा गृहनगर है, जहां मेरा जन्म हुआ था. मैं युद्ध-पूर्व समाज में पला-बढ़ा था, जहाँ मैंने शांति का मूल्य नहीं सीखा और न ही युद्ध के प्रलय की कल्पना की. उस समय को याद करना मुझे आज भी डरावना लगता है जब बच्चों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जाता था, और उन्हें सिखाया जाता था कि आत्मसमर्पण से पहले आत्महत्या करना बेहतर होगा.

जब युद्ध समाप्त हुआ तब मैं अपने जीवन में पहली बार जली हुई ज़मीन पर खड़ा होकर, शांति को सराह सका.

यह एक चमत्कार ही था कि मैं और मेरे परिवार के अन्य लोग बम्ब वाले दिन बच निकले. उस साल सर्दियों में मेरी माँ को कई महीनों तक तेज़ बुखार रहा, जिसने लगभग उसकी जान ले ली. मैंने और मेरी बहन ने भी बुखार सहा. पर उसके कुछ समय बाद विकिरण-बीमारी (रेडिएशन-सिकनेस) शुरू हुई जो विस्फोट के कारण पैदा हुई विकिरण के संपर्क में आने के कारण हुई थी.